CORPORATE OFFICE
Delhi Office
706 Ground Floor Dr. Mukherjee Nagar Near Batra Cinema Delhi – 110009
Noida Office
Basement C-32 Noida Sector-2 Uttar Pradesh 201301

Yojna IAS
yojnaias.com
योजना है तो सफलता है
website : www.yojnaias.com
Contact No. : +91 8595390705

दिनांक: 12 अप्रैल 2024

भारत में 'विश्व हेपेटाइटिस रिपोर्ट 2024 का महत्व

(यह लेख 'दैनिक करंट अफेयर्स' और "विश्व हेपेटाइटिस रिपोर्ट" के विषय विवरण को शामिल करता है। यह विषय यूपीएससी सीएसई परीक्षा के "विज्ञान और प्रौद्योगिकी" अनुभाग में प्रासंगिक है।)

खबरों में क्यों ?

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने हाल ही में वर्ष 2024 के लिए वैश्विक हेपेटाइटिस रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत वायरल हेपेटाइटिस के सबसे भारी बोझों में से एक है, जिसके परिणामस्वरूप लीवर में सूजन हो सकती है और संभावित रूप से लीवर कैंसर हो सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के इस रिपोर्ट में निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है –

भारत में उच्च प्रसार :

1. अनुमान है कि 2022 में 29.8 मिलियन भारतीय हेपेटाइटिस बी से और 5.5 मिलियन हेपेटाइटिस सी से पीड़ित थे।
2. ये संख्याएँ वायरल हेपेटाइटिस के वैश्विक बोझ के एक बड़े हिस्से को दर्शाती हैं।

मृत्यु दर :

1. हेपेटाइटिस बी और सी दोनों क्रोनिक लीवर रोग, सिरोसिस और कैंसर का कारण बन सकते हैं, जो वैश्विक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।
2. पुरुष असमान रूप से प्रभावित होते हैं, और मामलों का एक बड़ा हिस्सा 30-54 आयु वर्ग के लोगों में होता है।

चुनौतियां और उपचार :

1. भारत में इस रोग के रोकथाम में प्रगति के बावजूद,इसके निदान और उपचार करना बड़ी चुनौतियां बनी हुई हैं।
2. इस रोग से संक्रमित कई व्यक्ति अपनी स्थिति से अनजान रहते हैं, जिससे इस रोग के कारण होने वाली मौतों की संख्या में वृद्धि होती है।

हेपेटाइटिस को खत्म करने के लिए वैश्विक स्तर पर किए जा रहे प्रयास :

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) वायरल हेपेटाइटिस से निपटने के लिए ठोस वैश्विक प्रयास का आग्रह करता है।
2. परीक्षण और उपचार तक पहुंच का विस्तार करना, रोकथाम के उपायों को मजबूत करना, डेटा संग्रह में सुधार करना और समुदायों को शामिल करना महत्वपूर्ण है।

हेपेटाइटिस को 2030 तक खत्म करना :

1. WHO ने 2030 तक हेपेटाइटिस को खत्म करने के लक्ष्य के साथ एक सार्वजनिक स्वास्थ्य दृष्टिकोण की रूपरेखा तैयार की है।
2. इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य के लिए स्वास्थ्य देखभाल और वित्त पोषण तक पहुंच में असमानताओं को दूर करने के साथ-साथ सस्ती दवाएं और सेवाएं सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

हेपेटाइटिस के बारे में :

- हेपेटाइटिस की विशेषता यकृत की सूजन है, जो अक्सर वायरल संक्रमण से उत्पन्न होती है, हालांकि अन्य कारक भी इसे ट्रिगर कर सकते हैं। इनमें ऑटोइम्यून स्थितियां, दवा प्रतिक्रियाएं, विषाक्त पदार्थ और शराब का सेवन शामिल हो सकते हैं।
- ऑटोइम्यून हेपेटाइटिस तब प्रकट होता है जब शरीर यकृत ऊतक को लक्षित करने वाले एंटीबॉडी का उत्पादन करता है। लीवर पोषक तत्वों के प्रसंस्करण, रक्त को शुद्ध करने और संक्रमण से लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- लीवर में सूजन या क्षति इसके कार्यों को ख़राब कर सकती है। वायरल हेपेटाइटिस को पांच मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है: हेपेटाइटिस ए, बी, सी, डी और ई, प्रत्येक एक अलग वायरस के कारण होता है।

हेपेटाइटिस के प्रमुख प्रकार :

हेपेटाइटिस ए (एचएवी) :

- यह मुख्य रूप से दूषित भोजन या पानी खाने से फैलता है।
- इस रोग के लक्षणों में थकान, मतली, पेट की परेशानी, भूख न लगना और पीलिया शामिल हैं।
- इस रोग के अधिकांश मामले में यह बिना किसी चिकित्सा के अपने आप ठीक हो जाता है और टीकाकरण एक प्रभावी निवारक उपाय है।

हेपेटाइटिस बी (एचबीवी) :

- यह संक्रमित रक्त, शारीरिक तरल पदार्थ के संपर्क में आने से या बच्चे के जन्म के दौरान संक्रमित मां से उसके बच्चे में फैलता है।
- इस रोग के लक्षणों मेंलक्षणों में थकान, पेट दर्द, गहरे रंग का मूत्र, जोड़ों का दर्द और पीलिया शामिल हैं।
- इसमें क्रोनिक संक्रमण, लीवर सिरोसिस और लीवर कैंसर में प्रगति हो सकती है।
- इसके रोकथाम के लिए अत्यधिक प्रभावी टीकाकरण उपलब्ध है।

हेपेटाइटिस सी (एचसीवी) :

- यह रोग मख्य रूप से रक्त-से-रक्त संपर्क के माध्यम से फैलता है, जैसे सुई साझा करना, या प्रसव के दौरान संक्रमित मां से उसके बच्चे में।
- इस रोग के प्रारंभिक चरण में अक्सर लक्षणहीन होते हैं।
- यह क्रोनिक हेपेटाइटिस, लीवर सिरोसिस और लीवर कैंसर का कारण बनता है।
- इस रोग के उपचार के लिए एंटीवायरल दवाओं में प्रगति के कारण इलाज की दर ऊंची हो गई है।

हेपेटाइटिस डी (एचडीवी) :

- हेपेटाइटिस डी (एचडीवी केवल उन व्यक्तियों में होती है जो पहले से ही हेपेटाइटिस बी से संक्रमित हैं।
- संचरण मार्ग हेपेटाइटिस बी के समानांतर हैं।
- यह अकेले हेपेटाइटिस बी संक्रमण की तुलना में यह अधिक गंभीर यकृत रोग का कारण बनता है।

हेपेटाइटिस ई (एचईवी) :

- यह आमतौर पर दूषित पानी के सेवन से फैलता है।
- इसके लक्षण भी हेपेटाइटिस ए के समान होते हैं लेकिन गर्भवती महिलाओं में अधिक गंभीर हो सकते हैं।
- हेपेटाइटिस ई आमतौर पर स्व-सीमित होता है लेकिन कुछ मामलों में तीव्र यकृत विफलता का कारण बन सकता है।
- पूर्व और दक्षिण एशिया में प्रचलित, दूषित पानी के माध्यम से फैलता है। हालांकि चीन में एक टीका उपलब्ध है, लेकिन यह अभी तक व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं है।

हेपेटाइटिस रोग होने के प्रमुख कारण :

हेपेटाइटिस रोग होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित है –

- **विषाणु संक्रमण :** हेपेटाइटिस कई प्रकार के वायरस के कारण हो सकता है, जिनमें हेपेटाइटिस ए, बी, सी, डी और ई शामिल हैं। प्रत्येक प्रकार एक अलग वायरस के कारण होता है और विभिन्न माध्यमों से फैलता है, जैसे दूषित भोजन या पानी (हेपेटाइटिस ए और ई)), रक्त-से-रक्त संपर्क (हेपेटाइटिस बी, सी, और डी), या एक संक्रमित मां से उसके बच्चे में प्रसव के दौरान (हेपेटाइटिस बी, सी, और ई)।
- **ऑटोइम्यून हेपेटाइटिस :** ऐसा तब होता है जब शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से लीवर पर हमला कर देती है, जिससे सूजन हो जाती है और लीवर खराब हो जाता है। ऑटोइम्यून हेपेटाइटिस का सटीक कारण पूरी तरह से समझा नहीं गया है, लेकिन आनुवांशिक और पर्यावरणीय कारक इसमें भूमिका निभा सकते हैं।
- **शराब और नशीली दवाएं :** लंबे समय तक अत्यधिक शराब का सेवन अल्कोहलिक हेपेटाइटिस का कारण बन सकता है, जो शराब के दुरुपयोग के कारण लीवर की सूजन है। कुछ दवाएं, दवाएं और विषाक्त पदार्थ भी हेपेटाइटिस का कारण बन सकते हैं जब उनका चयापचय यकृत द्वारा किया जाता है या जब शरीर उन पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया करता है।
- **चयापचयी विकार :** कुछ चयापचय संबंधी विकार, जैसे कि विल्सन रोग और अल्फा-1 ऐन्टीट्रिप्सिन की कमी, लीवर में हानिकारक पदार्थों के संचय का कारण बन सकते हैं, जिससे समय के साथ सूजन और क्षति हो सकती है।
- **अन्य कारण :** हेपेटाइटिस अन्य कारकों के कारण भी हो सकता है जैसे कि फैटी लीवर रोग (गैर-अल्कोहल स्टीटोहेपेटाइटिस), परजीवियों या बैक्टीरिया से संक्रमण, कुछ रसायनों या विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना, और शायद ही कभी, लीवर के कार्य को प्रभावित करने वाले कुछ वंशानुगत विकारों के कारण।

हेपेटाइटिस से निपटने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई पहल :

- **राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीएचसीपी) :** 2018 में लॉन्च किए गए, एनवीएचसीपी का उद्देश्य मुफ्त परीक्षण और उपचार सेवाएं प्रदान करके वायरल हेपेटाइटिस, विशेष रूप से हेपेटाइटिस बी और सी से निपटना है। कार्यक्रम उच्च जोखिम वाली आबादी की जांच करने, जागरूकता बढ़ाने और किफायती निदान और उपचार तक पहुंच में सुधार करने पर केंद्रित है।
- **टीकाकरण कार्यक्रम :** सरकार ने प्रसव के दौरान मां से बच्चे में वायरस के संचरण को रोकने के लिए शिशुओं के लिए हेपेटाइटिस बी टीकाकरण को अपने नियमित टीकाकरण कार्यक्रम में एकीकृत किया है। इसके अतिरिक्त, उच्च जोखिम वाले समूहों और स्वास्थ्य कर्मियों के बीच टीकाकरण कवरेज का विस्तार करने के प्रयास जारी हैं।

प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न :

Q1. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है? (यूपीएससी-2019)

A. हेपेटाइटिस बी वायरस एचआईवी की तरह ही फैलता है।
B. हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी के विपरीत, कोई टीका नहीं है।
C. विश्व स्तर पर, हेपेटाइटिस बी और सी वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या एचआईवी से संक्रमित लोगों की तुलना में कई गुना अधिक है।
D. हेपेटाइटिस बी और सी वायरस से संक्रमित कुछ लोगों में कई वर्षों तक लक्षण दिखाई नहीं देते हैं।

उत्तर: B

Q2. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. हेपेटाइटिस डी केवल उन व्यक्तियों में होता है जो पहले से ही हेपेटाइटिस बी से संक्रमित हैं।
2. टीके केवल हेपेटाइटिस बी के लिए उपलब्ध हैं।
3. हेपेटाइटिस ई की रोकथाम का प्राथमिक तरीका पीने से पहले पानी को उबालना या उपचारित करना है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

A. केवल एक
B. केवल दो
C. तीनों।
D. इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: B

मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न :

Q1. हेपेटाइटिस के संबंध में सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर टीके लगाने के प्रति झिझक को बढ़ावा देने में गलत सूचना और दुष्प्रचार की भूमिका का विश्लेषण करें। दुष्प्रचार और गलत जानकारी से बचने और नागरिकों को टीके लगाने के प्रति विश्वास को बढ़ावा देने के लिए सरकार और सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारी क्या कदम उठा सकते हैं? तर्कसंगत व्याख्या कीजिए।

Akhilesh kumar shrivastav

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com